



Mr.

27 Nov 1969

04:38 PM

Solan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121847901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 27/11/1969  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 16:38:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 24:09:03 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Solan  
राज्य \_\_\_\_\_: Himachal Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:54:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 77:06:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:21:36 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 16:16:24 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:12:26 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 20:41:09 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:58:22 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:19:52 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:21:30 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 11:36:08 वृश्चिक  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 01:02:15 वृष

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पुनर्वसु - 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: शुभ  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मार्जार  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: के-केवल  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: धनु

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास        | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|------------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1891     | मार्गशीर्ष | 6              |
| पंजाबी     | संवत : 2026   | मार्गशीर्ष | 13             |
| बंगाली     | सन् : 1376    | मार्गशीर्ष | 11             |
| तमिल       | संवत : 2026   | कार्तिक    | 12             |
| केरल       | कोल्लम : 1145 | वृश्चिक    | 12             |
| नेपाली     | संवत : 2026   | मार्गशीर्ष | 12             |
| चैत्रादि   | संवत : 2026   | मार्गशीर्ष | कृष्ण 3        |
| कार्तिकादि | संवत : 2026   | कार्तिक    | कृष्ण 3        |

### पंचांग

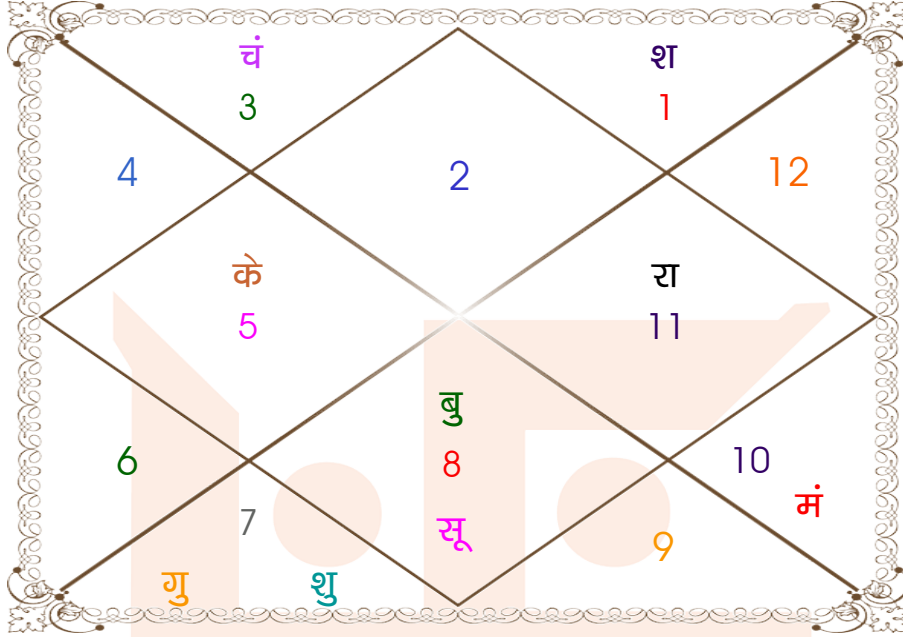
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 3  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 10:04:20  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 4  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:25:42 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शुभ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:54:19 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शुभ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 10:04:20 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 03:00:47  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:13:18  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 15 वर्ष 3 मा 10 दि

### घात चक्र

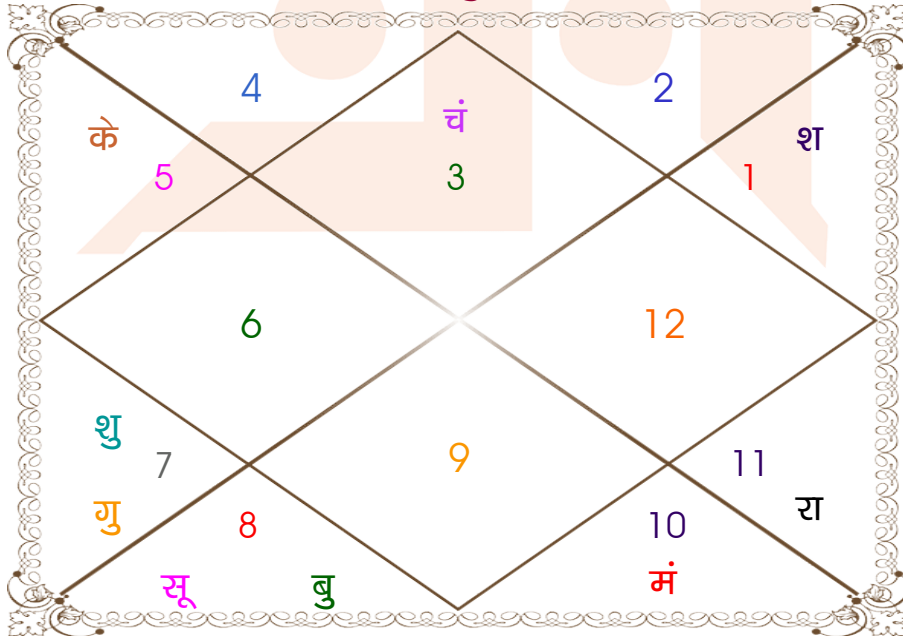
मास \_\_\_\_\_ : आषाढ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : सोमवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मूषक  
लग्न \_\_\_\_\_ : कर्क  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मीन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
मंगल \_\_\_\_\_ : मेष  
बुध \_\_\_\_\_ : मकर  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शनि \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
राहु \_\_\_\_\_ : कर्क

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

|    |          |          |    |
|----|----------|----------|----|
|    | श        | ल        | चं |
| रा |          |          |    |
| मं |          |          | के |
|    | बु<br>सू | शु<br>गु |    |

## लग्न कुंडली

|    |          |          |
|----|----------|----------|
| ल  | श        |          |
| चं |          | रा       |
|    |          | मं       |
| के | गु<br>शु | सू<br>बु |

विंशोत्तरी  
गुरु 15वर्ष 3मा 10दि  
गुरु

27/11/1969

09/03/2089

|        |            |
|--------|------------|
| गुरु   | 09/03/1985 |
| शनि    | 09/03/2004 |
| बुध    | 09/03/2021 |
| केतु   | 09/03/2028 |
| शुक्र  | 09/03/2048 |
| सूर्य  | 09/03/2054 |
| चन्द्र | 09/03/2064 |
| मंगल   | 09/03/2071 |
| राहु   | 09/03/2089 |

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 10मा 27दि  
सिद्धा

25/10/2025

25/10/2032

|         |            |
|---------|------------|
| सिद्धा  | 06/03/2027 |
| संकटा   | 25/09/2028 |
| मंगला   | 05/12/2028 |
| पिंगला  | 26/04/2029 |
| धान्या  | 25/11/2029 |
| भामरी   | 05/09/2030 |
| भद्रिका | 26/08/2031 |
| उल्का   | 25/10/2032 |

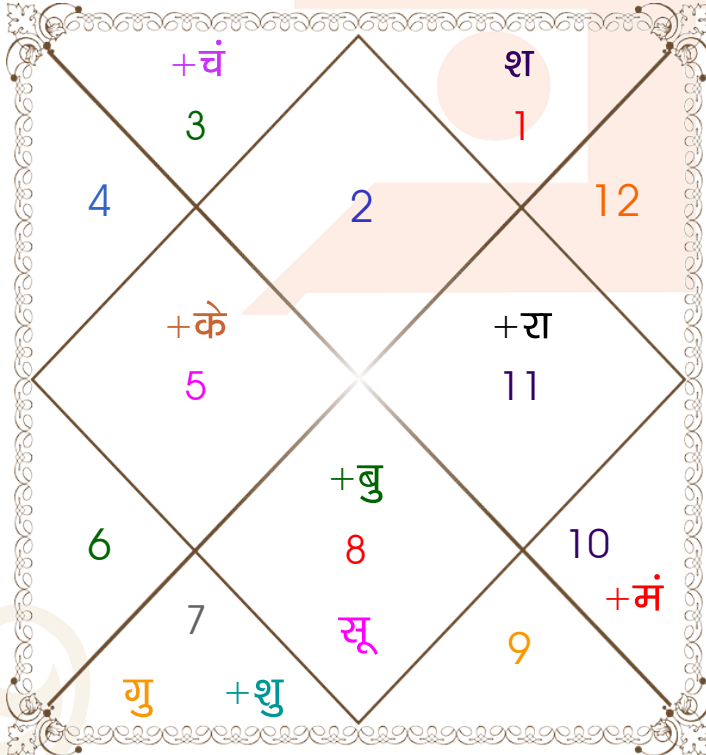
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व | अ | राशि   | अंश      | गति       | नक्षत्र     | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    |   |   | वृष    | 01:02:15 | 420:05:22 | कृतिका      | 2  | 3   | शुक्र | सूर्य | राहु  | ---        |
| सूर्य   |   |   | वृश्चि | 11:36:08 | 01:00:44  | अनुराधा     | 3  | 17  | मंगल  | शनि   | चंद्र | मित्र राशि |
| चंद्र   |   |   | मिथु   | 20:36:03 | 11:57:39  | पुनर्वसु    | 1  | 7   | बुध   | गुरु  | गुरु  | मित्र राशि |
| मंगल    |   |   | मक     | 23:05:50 | 00:44:17  | श्रवण       | 4  | 22  | शनि   | चंद्र | सूर्य | उच्च राशि  |
| बुध     | अ |   | वृश्चि | 17:50:51 | 01:33:22  | ज्येष्ठा    | 1  | 18  | मंगल  | बुध   | बुध   | सम राशि    |
| गुरु    |   |   | तुला   | 03:07:07 | 00:11:30  | चित्रा      | 3  | 14  | शुक्र | मंगल  | शुक्र | शत्रु राशि |
| शुक्र   |   |   | तुला   | 27:34:58 | 01:15:20  | विशाखा      | 3  | 16  | शुक्र | गुरु  | शुक्र | स्वराशि    |
| शनि     | व |   | मेष    | 09:50:50 | 00:03:42  | अश्विनी     | 3  | 1   | मंगल  | केतु  | शनि   | नीच राशि   |
| राहु    | व |   | कुंभ   | 24:02:22 | 00:10:32  | पू०भाद्रपद  | 2  | 25  | शनि   | गुरु  | बुध   | मित्र राशि |
| केतु    | व |   | सिंह   | 24:02:22 | 00:10:32  | पू०फाल्गुनी | 4  | 11  | सूर्य | शुक्र | बुध   | शत्रु राशि |
| हर्ष    |   |   | कन्या  | 14:21:12 | 00:02:27  | हस्त        | 2  | 13  | बुध   | चंद्र | गुरु  | ---        |
| नेप     |   |   | वृश्चि | 05:14:48 | 00:02:15  | अनुराधा     | 1  | 17  | मंगल  | शनि   | शनि   | ---        |
| प्लूटो  |   |   | कन्या  | 03:39:05 | 00:01:05  | उ०फाल्गुनी  | 3  | 12  | बुध   | सूर्य | शनि   | ---        |
| दशम भाव |   |   | मक     | 14:26:13 | --        | श्रवण       | -- | 22  | शनि   | चंद्र | गुरु  | --         |

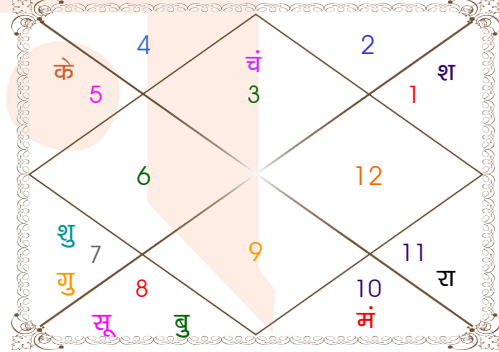
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:15

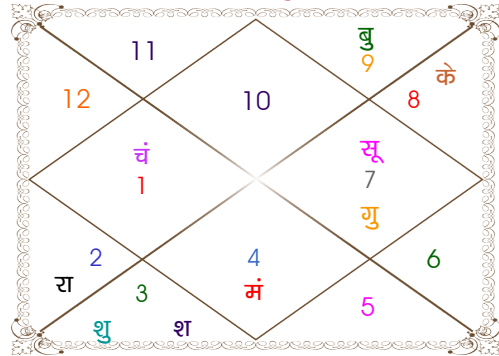
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | मेष 13:16:15     | वृष 01:02:15     |
| 2   | वृष 13:16:15     | वृष 25:30:14     |
| 3   | मिथुन 07:44:14   | मिथुन 19:58:14   |
| 4   | कर्क 02:12:13    | कर्क 14:26:13    |
| 5   | सिंह 02:12:13    | सिंह 19:58:14    |
| 6   | कन्या 07:44:14   | कन्या 25:30:14   |
| 7   | तुला 13:16:15    | वृश्चिक 01:02:15 |
| 8   | वृश्चिक 13:16:15 | वृश्चिक 25:30:14 |
| 9   | धनु 07:44:14     | धनु 19:58:14     |
| 10  | मकर 02:12:13     | मकर 14:26:13     |
| 11  | कुम्भ 02:12:13   | कुम्भ 19:58:14   |
| 12  | मीन 07:44:14     | मीन 25:30:14     |

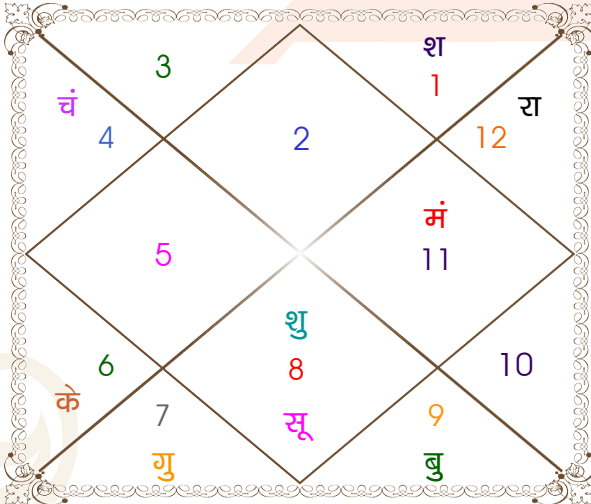
### निरयण भाव चलित

| भाव | राशि    | अंश      |
|-----|---------|----------|
| 1   | वृष     | 01:02:15 |
| 2   | वृष     | 27:31:43 |
| 3   | मिथुन   | 20:29:29 |
| 4   | कर्क    | 14:26:13 |
| 5   | सिंह    | 13:17:28 |
| 6   | कन्या   | 20:03:54 |
| 7   | वृश्चिक | 01:02:15 |
| 8   | वृश्चिक | 27:31:43 |
| 9   | धनु     | 20:29:29 |
| 10  | मकर     | 14:26:13 |
| 11  | कुम्भ   | 13:17:28 |
| 12  | मीन     | 20:03:54 |

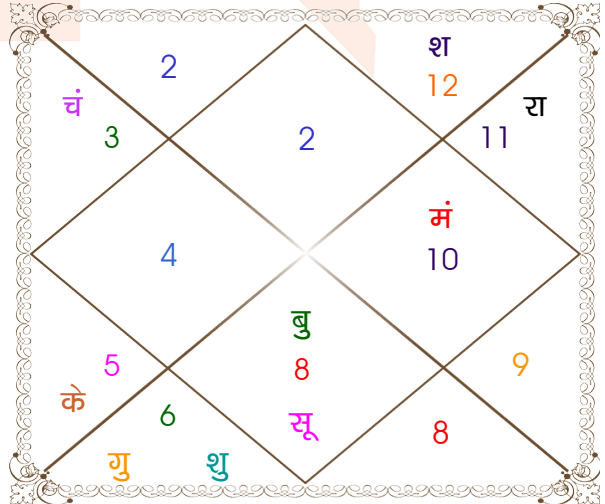
### तारा चक्र

| जन्म       | सम्पत्    | विपत्    | क्षेम   | प्रत्यारि   | साधक       | वध     | मित्र   | अतिमित्र |
|------------|-----------|----------|---------|-------------|------------|--------|---------|----------|
| पुनर्वसु   | पुष्य     | आश्लेषा  | मघा     | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त   | चित्रा  | स्वाति   |
| विशाखा     | अनुराधा   | ज्येष्ठा | मूल     | पूर्वाषाढा  | उत्तराषाढा | श्रवण  | धनिष्ठा | शतभिषा   |
| पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती    | अश्विनी | भरणी        | कृतिका     | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा  |

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 15 वर्ष 3 मास 10 दिन

| गुरु 16 वर्ष     | शनि 19 वर्ष      | बुध 17 वर्ष      | केतु 7 वर्ष      | शुक्र 20 वर्ष    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 27/11/1969       | 09/03/1985       | 09/03/2004       | 09/03/2021       | 09/03/2028       |
| 09/03/1985       | 09/03/2004       | 09/03/2021       | 09/03/2028       | 09/03/2048       |
| गुरु 27/04/1971  | शनि 12/03/1988   | बुध 05/08/2006   | केतु 05/08/2021  | शुक्र 09/07/2031 |
| शनि 07/11/1973   | बुध 20/11/1990   | केतु 03/08/2007  | शुक्र 05/10/2022 | सूर्य 08/07/2032 |
| बुध 13/02/1976   | केतु 30/12/1991  | शुक्र 02/06/2010 | सूर्य 10/02/2023 | चंद्र 09/03/2034 |
| केतु 19/01/1977  | शुक्र 28/02/1995 | सूर्य 09/04/2011 | चंद्र 11/09/2023 | मंगल 09/05/2035  |
| शुक्र 20/09/1979 | सूर्य 10/02/1996 | चंद्र 07/09/2012 | मंगल 07/02/2024  | राहु 09/05/2038  |
| सूर्य 08/07/1980 | चंद्र 11/09/1997 | मंगल 04/09/2013  | राहु 25/02/2025  | गुरु 07/01/2041  |
| चंद्र 07/11/1981 | मंगल 20/10/1998  | राहु 24/03/2016  | गुरु 01/02/2026  | शनि 09/03/2044   |
| मंगल 14/10/1982  | राहु 26/08/2001  | गुरु 30/06/2018  | शनि 12/03/2027   | बुध 08/01/2047   |
| राहु 09/03/1985  | गुरु 09/03/2004  | शनि 09/03/2021   | बुध 09/03/2028   | केतु 09/03/2048  |

| सूर्य 6 वर्ष     | चंद्र 10 वर्ष    | मंगल 7 वर्ष      | राहु 18 वर्ष     | गुरु 16 वर्ष    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|-----------------|
| 09/03/2048       | 09/03/2054       | 09/03/2064       | 09/03/2071       | 09/03/2089      |
| 09/03/2054       | 09/03/2064       | 09/03/2071       | 09/03/2089       | 00/00/0000      |
| सूर्य 26/06/2048 | चंद्र 08/01/2055 | मंगल 05/08/2064  | राहु 20/11/2073  | गुरु 27/11/2089 |
| चंद्र 26/12/2048 | मंगल 09/08/2055  | राहु 23/08/2065  | गुरु 14/04/2076  | 00/00/0000      |
| मंगल 03/05/2049  | राहु 06/02/2057  | गुरु 30/07/2066  | शनि 19/02/2079   | 00/00/0000      |
| राहु 27/03/2050  | गुरु 08/06/2058  | शनि 08/09/2067   | बुध 08/09/2081   | 00/00/0000      |
| गुरु 14/01/2051  | शनि 08/01/2060   | बुध 04/09/2068   | केतु 26/09/2082  | 00/00/0000      |
| शनि 27/12/2051   | बुध 08/06/2061   | केतु 31/01/2069  | शुक्र 26/09/2085 | 00/00/0000      |
| बुध 01/11/2052   | केतु 07/01/2062  | शुक्र 03/04/2070 | सूर्य 21/08/2086 | 00/00/0000      |
| केतु 09/03/2053  | शुक्र 08/09/2063 | सूर्य 08/08/2070 | चंद्र 19/02/2088 | 00/00/0000      |
| शुक्र 09/03/2054 | सूर्य 09/03/2064 | चंद्र 09/03/2071 | मंगल 09/03/2089  | 00/00/0000      |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 15 वर्ष 3 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - शनि       | केतु - बुध       | शुक्र - शुक्र    | शुक्र - सूर्य    | शुक्र - चंद्र    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 01/02/2026       | 12/03/2027       | 09/03/2028       | 09/07/2031       | 08/07/2032       |
| 12/03/2027       | 09/03/2028       | 09/07/2031       | 08/07/2032       | 09/03/2034       |
| शनि 06/04/2026   | बुध 03/05/2027   | शुक्र 28/09/2028 | सूर्य 27/07/2031 | चंद्र 28/08/2032 |
| बुध 02/06/2026   | केतु 24/05/2027  | सूर्य 27/11/2028 | चंद्र 27/08/2031 | मंगल 03/10/2032  |
| केतु 26/06/2026  | शुक्र 23/07/2027 | चंद्र 09/03/2029 | मंगल 17/09/2031  | राहु 02/01/2033  |
| शुक्र 01/09/2026 | सूर्य 10/08/2027 | मंगल 19/05/2029  | राहु 11/11/2031  | गुरु 24/03/2033  |
| सूर्य 21/09/2026 | चंद्र 10/09/2027 | राहु 18/11/2029  | गुरु 30/12/2031  | शनि 29/06/2033   |
| चंद्र 25/10/2026 | मंगल 01/10/2027  | गुरु 29/04/2030  | शनि 25/02/2032   | बुध 23/09/2033   |
| मंगल 18/11/2026  | राहु 24/11/2027  | शनि 08/11/2030   | बुध 17/04/2032   | केतु 28/10/2033  |
| राहु 17/01/2027  | गुरु 11/01/2028  | बुध 29/04/2031   | केतु 09/05/2032  | शुक्र 07/02/2034 |
| गुरु 12/03/2027  | शनि 09/03/2028   | केतु 09/07/2031  | शुक्र 08/07/2032 | सूर्य 09/03/2034 |

| शुक्र - मंगल     | शुक्र - राहु     | शुक्र - गुरु     | शुक्र - शनि      | शुक्र - बुध      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 09/03/2034       | 09/05/2035       | 09/05/2038       | 07/01/2041       | 09/03/2044       |
| 09/05/2035       | 09/05/2038       | 07/01/2041       | 09/03/2044       | 08/01/2047       |
| मंगल 03/04/2034  | राहु 21/10/2035  | गुरु 16/09/2038  | शनि 09/07/2041   | बुध 02/08/2044   |
| राहु 06/06/2034  | गुरु 15/03/2036  | शनि 17/02/2039   | बुध 20/12/2041   | केतु 02/10/2044  |
| गुरु 02/08/2034  | शनि 04/09/2036   | बुध 05/07/2039   | केतु 25/02/2042  | शुक्र 23/03/2045 |
| शनि 08/10/2034   | बुध 06/02/2037   | केतु 31/08/2039  | शुक्र 06/09/2042 | सूर्य 14/05/2045 |
| बुध 08/12/2034   | केतु 11/04/2037  | शुक्र 09/02/2040 | सूर्य 03/11/2042 | चंद्र 08/08/2045 |
| केतु 01/01/2035  | शुक्र 11/10/2037 | सूर्य 29/03/2040 | चंद्र 07/02/2043 | मंगल 07/10/2045  |
| शुक्र 13/03/2035 | सूर्य 05/12/2037 | चंद्र 18/06/2040 | मंगल 16/04/2043  | राहु 12/03/2046  |
| सूर्य 04/04/2035 | चंद्र 06/03/2038 | मंगल 14/08/2040  | राहु 06/10/2043  | गुरु 28/07/2046  |
| चंद्र 09/05/2035 | मंगल 09/05/2038  | राहु 07/01/2041  | गुरु 09/03/2044  | शनि 08/01/2047   |

| शुक्र - केतु     | सूर्य - सूर्य    | सूर्य - चंद्र    | सूर्य - मंगल     | सूर्य - राहु     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 08/01/2047       | 09/03/2048       | 26/06/2048       | 26/12/2048       | 03/05/2049       |
| 09/03/2048       | 26/06/2048       | 26/12/2048       | 03/05/2049       | 27/03/2050       |
| केतु 01/02/2047  | सूर्य 14/03/2048 | चंद्र 11/07/2048 | मंगल 02/01/2049  | राहु 21/06/2049  |
| शुक्र 13/04/2047 | चंद्र 23/03/2048 | मंगल 22/07/2048  | राहु 21/01/2049  | गुरु 04/08/2049  |
| सूर्य 05/05/2047 | मंगल 30/03/2048  | राहु 18/08/2048  | गुरु 08/02/2049  | शनि 25/09/2049   |
| चंद्र 09/06/2047 | राहु 15/04/2048  | गुरु 12/09/2048  | शनि 28/02/2049   | बुध 10/11/2049   |
| मंगल 04/07/2047  | गुरु 30/04/2048  | शनि 11/10/2048   | बुध 18/03/2049   | केतु 30/11/2049  |
| राहु 06/09/2047  | शनि 17/05/2048   | बुध 06/11/2048   | केतु 25/03/2049  | शुक्र 23/01/2050 |
| गुरु 02/11/2047  | बुध 02/06/2048   | केतु 16/11/2048  | शुक्र 16/04/2049 | सूर्य 09/02/2050 |
| शनि 08/01/2048   | केतु 08/06/2048  | शुक्र 17/12/2048 | सूर्य 22/04/2049 | चंद्र 08/03/2050 |
| बुध 09/03/2048   | शुक्र 26/06/2048 | सूर्य 26/12/2048 | चंद्र 03/05/2049 | मंगल 27/03/2050  |

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

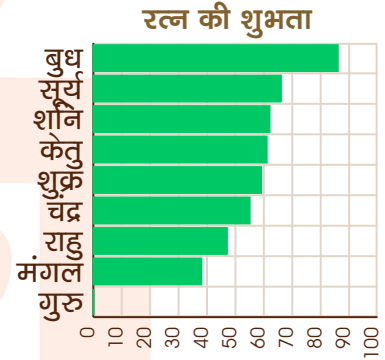
|              |                        |
|--------------|------------------------|
| मूलांक       | 9                      |
| भाग्यांक     | 9                      |
| मित्र अंक    | 1, 3, 6, 9             |
| शत्रु अंक    | 4, 5, 8                |
| शुभ वर्ष     | 27,36,45,54,63         |
| शुभ दिन      | शनि, बुध, शुक्र        |
| शुभ ग्रह     | शनि, बुध, शुक्र        |
| मित्र राशि   | कन्या, कुम्भ           |
| मित्र लग्न   | सिंह, मकर, मीन         |
| अनुकूल देवता | गणेश                   |
| शुभ रत्न     | हीरा                   |
| शुभ उपरत्न   | जरकिन, ओपल             |
| भाग्य रत्न   | नीलम                   |
| शुभ धातु     | रजत                    |
| शुभ रंग      | रजत                    |
| शुभ दिशा     | दक्षिणपूर्व            |
| शुभ समय      | सूर्योदय               |
| दान पदार्थ   | मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न     | चावल                   |
| दान द्रव्य   | दूध                    |

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र                              |
|----------|-------|-------|--------------------------------------|
| पन्ना    | बुध   | 86%   | दम्पति, धन, सन्तति सुख               |
| माणिक्य  | सूर्य | 66%   | दम्पति, सुख                          |
| नीलम     | शनि   | 62%   | कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति |
| लहसुनिया | केतु  | 61%   | सुख, दम्पति                          |
| हीरा     | शुक्र | 59%   | शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य        |
| मोती     | चंद्र | 55%   | धन, पराक्रम                          |
| गोमेद    | राहु  | 47%   | व्यावसायिक हानि, व्यय                |
| मूंगा    | मंगल  | 38%   | नेष्ट भाग्य, व्यय, दाम्पत्य कष्ट     |
| पुखराज   | गुरु  | 0%    | शत्रु व रोग, दुर्घटना, हानि          |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| गुरु  | 09/03/1985 | 72%     | 61%  | 50%   | 73%   | 0%     | 43%  | 62%  | 47%   | 61%      |
| शनि   | 09/03/2004 | 53%     | 34%  | 12%   | 92%   | 0%     | 65%  | 75%  | 55%   | 47%      |
| बुध   | 09/03/2021 | 72%     | 34%  | 38%   | 98%   | 0%     | 65%  | 62%  | 47%   | 61%      |
| केतु  | 09/03/2028 | 53%     | 34%  | 50%   | 86%   | 0%     | 65%  | 50%  | 22%   | 73%      |
| शुक्र | 09/03/2048 | 53%     | 34%  | 38%   | 92%   | 0%     | 72%  | 69%  | 55%   | 67%      |
| सूर्य | 09/03/2054 | 78%     | 61%  | 50%   | 86%   | 0%     | 43%  | 50%  | 22%   | 47%      |
| चंद्र | 09/03/2064 | 72%     | 67%  | 38%   | 92%   | 0%     | 59%  | 62%  | 22%   | 47%      |
| मंगल  | 09/03/2071 | 72%     | 61%  | 56%   | 73%   | 0%     | 59%  | 62%  | 22%   | 67%      |
| राहु  | 09/03/2089 | 53%     | 34%  | 12%   | 86%   | 0%     | 65%  | 69%  | 61%   | 47%      |

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 28/04/1971-10/06/1973 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 10/06/1973-23/07/1975 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 23/07/1975-07/09/1977 | -----                 | -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 04/11/1979-15/03/1980 | 27/07/1980-06/10/1982 | -----                 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 21/03/1990-20/06/1990 | 15/12/1990-05/03/1993 | 15/10/1993-10/11/1993 |

### द्वितीय चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 07/06/2000-23/07/2002 | 08/01/2003-07/04/2003 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 23/07/2002-08/01/2003 | 07/04/2003-06/09/2004 | 13/01/2005-26/05/2005 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 06/09/2004-13/01/2005 | 26/05/2005-01/11/2006 | 10/01/2007-16/07/2007 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 10/09/2009-15/11/2011 | 16/05/2012-04/08/2012 | -----                 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | -----                 |

### तृतीय चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 31/05/2032-13/07/2034 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 13/07/2034-27/08/2036 | -----                 | -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 22/10/2038-05/04/2039 | 13/07/2039-28/01/2041 | 06/02/2041-26/09/2041 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | -----                 |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार         | फल  | क्षेत्र      |
|------------------------|-----|--------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | शुभ | स्वास्थ्य    |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | सम  | धन           |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | सम  | पराक्रम हानि |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | शुभ | सन्तति       |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | शुभ | भाग्योदय     |

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या

जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

#### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपकी प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

करके सुखानुभूति करेंगे।

### मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

### बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

### गुरु

षष्ठ भाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

## शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

## राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु  
( 09/03/2021 - 09/03/2028 )

केतु की महादशा 09/03/2021 को आरम्भ और 09/03/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपकी यात्रा, व्यय, अवांछित परिवर्तन, और सगे संबंधियों की सहायता मिली होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको ख्याति, प्रगति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप आशावादी होंगे और स्वयं को स्फूर्तिवान तथा सक्रिय महसूस करेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, छाती से संबंधित बीमारी, मूत्राशय की समस्या, वृक्कशोथ की बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको माता पिता से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार में अच्छी आय होगी, विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे। जीविका के लिये विधि, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सम्पर्क-कार्य, प्रबन्धन, ग्राफिक कला, ललित कला, विमान-विज्ञान, शिक्षण, परिष्कृत कला आदि का चयन कर सकते हैं। वस्त्र, चमड़े, रबड़, प्लास्टिक, मवेशी, अनाज, फल, सोने, चाँदी, कलाकृतियों आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, सम्मान और लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा मनोकामना पूरी होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, कार्य-व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी। यह दशा आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के मामले तूल पकड़ेंगे और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी-बड़ी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप विद्यालय बदल सकते हैं। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर विज्ञान, परिष्कृत कला, विधि, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, होटल प्रबंधन आदि में आपकी रुचि होगी। आप संतुलित और समझदार हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को यश और ख्याति प्राप्त होगी और जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। आपके पड़ोसी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को यश और ख्याति की प्राप्ति और उन्नति होगी। आपका उनके साथ कुछ मतान्तर हो सकता है। आपके पिता के जीवन में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को लाभ मिलेगा और उन्नति होगी जबकि बड़ों को विरोधियों पर विजय, ननिहाल से सहायता और प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको गृह-सुख, उत्तम शिक्षा, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम और सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- केतु - गुरु  
( 25/02/2025 - 01/02/2026 )**

आपके लिए केतु महादशा 09/03/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 25/02/2025 को प्रारंभ होकर 01/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपकी शत्रुओं पर विजय होगी। स्पर्धियों पर सफल रहेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में जीत सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। माता की बौद्धिक उन्नति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, परिवर्तन और अप्रत्याशित लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित करेंगे, प्रसन्न और भाग्यशाली होंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- केतु - शनि  
( 01/02/2026 - 12/03/2027 )**

आपके लिए केतु महादशा 09/03/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 01/02/2026 को प्रारंभ होकर 12/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विरोधियों पर विजय होगी, अदालत में जीत होगी, कार्यालय उत्तम रहेगा, सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा। दान-धर्म में रुचि होगी, धनी बनेंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, प्रबंधनक्षमता अच्छी होगी।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, आय में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान के स्थान में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला

**महादशा :- शुक्र  
( 09/03/2028 - 09/03/2048 )**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 09/03/2028 को आरम्भ होकर 09/03/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना



शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित का रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र  
( 09/03/2028 - 09/07/2031 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 09/03/2028 को प्रारंभ होकर 09/03/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 09/03/2028 को प्रारंभ होकर 09/07/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है और विवाह, प्रेम और रति का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित रहेंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है, जिससे स्वास्थ्य की हानि संभव है। आपका कोई शत्रु नहीं होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।